❁ 20 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] शास्त्र तो हैं भक्ति मार्ग के। तुमको कहते हैं तुम क्यों शास्त्रों को नहीं मानते हो? बोलो, हम तो सब मानते हैं। आधाकल्प भक्ति की है। शास्त्र पढ़ते हैं तो कौन नहीं मानेंगे। रात और दिन होते हैं तो जरूर दोनो को मानेंगे ना। यह है बेहद का दिन और रात।

2] कोई-कोई बच्चे कहते हैं हम तो 24 घण्टे याद करते रहते हैं। परन्तु सदैव तो कोई कर नहीं सकते। बहुत में बहुत दो अढ़ाई घण्टे तक। जास्ती अगर लिखें तो बाबा मानता नहीं।

3] अभी बाप तुम बच्चों को कितनी अक्ल देते हैं। बाप की मत पर चलना है। स्टूडेन्ट जो पढ़ते हैं वही बुद्धि में चलना है। तुम भी यह संस्कार ले जाते हो। जैसे बाप में संकार हैं वैसे तुम्हारी आत्मा में भी यह संस्कार भरते हैं। फिर जब यहाँ आयेंगे तो वही पार्ट रिपीट होगा। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार आयेंगे।

✺ योग-

1] सिर्फ अल्फ को याद करने से तुम्हारा श्रृंगार हो जाता है। कोई हाथ-पांव चलाने की भी बात नहीं सिर्फ विचार की बात है। योग से तुम साफ, स्वच्छ और शोभनिक बन जाते हो, तुम्हारी आत्मा और शरीर कंचन बन जाता है, यह भी कमाल है ना।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– बाप की श्रीमत पर चलकर अपना श्रृंगार करो, परचिन्तन से अपना श्रृंगार मत बिगाड़ो, टाइम वेस्ट मत करो।

2] पैराड़ाइज के श्रृंगार के लिए पुरूषार्थ कर रहे हो। इसको क्या कहें? यहाँ बैठे हुए अपने को चेन्ज कर रहो हो। उठते, बैठते, चलते बाप ने एक मनमनाभव की चाबी दे दी है। बस एक सिवाए इसके और कोई भी फालतू बातें सुन-सुनाकर टाइम वेस्ट मत करो। तुम अपने ही श्रृंगार में लगे रहो। दूसरा करता हैं वा नही, इसमें तुम्हारा क्या जाता है ! तुम अपने पुरूषार्थ में रहो।

3] बाप बच्चों को समझाते हैं तुम सिर्फ अपने को देखो कि हम क्या कर रहे हैं। बहुत छोटी युक्ति बताई हैं, बस एक ही अक्षर है– मनमनाभव।

4] दैवीगुण भी धारण करने हैं। बाप सभी को एक ही रास्ता बताते हैं– **अल्फ बे।** सिर्फ अल्प की बात है। बाप को याद करते रहो तो तुम्हारा श्रृंगार सारा बदल जायेगा।

5] तो बाप समझाते हैं– बच्चे, टाइम वेस्ट न अपना करो, न औरों का करो। बाप युक्ति बहुत सहज बताते हैं। मुझे याद करो तो पाप मिट जाए। याद बिगर इतना श्रृंगार हो न सके। तुम यह बनने वाले हो ना। दैवी स्वभाव धारण करना है। इसमें कहने की भी दरकार नहीं। परन्तु पत्थरबुद्धि होने कारण सब समझाना पड़ता है। एक सेकेण्ड की बात है।

6] बाप कहते हैं– चक्रवर्ती राजा बनना है तो चक्र फिराते रहो। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, इसमें सारा बुद्धि से काम लेना है। अत्मा में ही मन-बुद्धि है।

...2

❁ 20 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

7] तो अब मुझे याद करो, टाइम वेस्ट मत करो। काम-काज करते भी बाप को याद करो। इतनी ढेर सब आत्मायें आशिक हैं एक परमपिता परमात्मा माशूक की।

8] कहाँ भी तुम जाओ, खाओ-पियो, घूमो फिरो, नौकरी करो, अपना श्रृंगार करते रहो। आत्मायें सब एक माशूक की आशिक हैं। बस, उनको ही याद करते रहो।

9] सिर्फ पेट के लिए रोटी आराम से मिले। वास्तव में पेट जास्ती नही खाता। भल तुम सन्यासी हो परन्तु राजयोगी हो। न बहुत ऊंचा, न नीचा। खाओ भल परन्तु ज्यादा हिर न जाओ। (आदत न पड़ जाए)

10] अपने दिल से पूछो– कितना पुरूषार्थ किया है, अपने को श्रृंगारने का। टाइम वहाँ वेस्ट तो नहीं किया है? बाप सावधान करते हैं– वाह्यात बातों में कहाँ भी टाइम न गँवाओ। बाप की श्रीमत याद रखो। मनुष्य मत पर न चलो।

11] अपने से पूछना है कि– अ) हम श्रीमत पर चलकर मनमनाभव की चाबी से अपना श्रृंगार ठीक कर रहे हैं? ब) उल्टी सुल्टी बातें सुनकर वा सुनाकर श्रृंगार बिगाड़ते तो नहीं है? क) आपस में प्रेम से रहते हैं? अपना वैल्युबुल टाइम कहीं पर वेस्ट तो नहीं करते हैं? ड) दैवी स्वभाव धारण किया है?

12] शान्ति की शक्ति को धारण कर सहजयोगी बनो।

13] वाणी द्वारा सबको सुख और शान्ति दो तो गायन योग्य बनेंगे।

✺ सेवा-

1] दूसरे को स्मृति दिलाते नहीं तो कैसे समझें तुम याद करते हो? क्या कोई डिफीकल्ट बात हैं? कोई इसमें खर्चा है? कुछ भी नहीं। बस, बाब को याद करते रहो तो तुम्हारे पाप कट जाएं। दैवीगुण भी धारण करने हैं।

2] यही एक-दो को याद दिलाओ– शिवबाबा याद है? वर्सा याद है? विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है? विचार करो– यहाँ बैठे-बैठे तुम्हारी क्या कमाई है ! इस कमाई से अपार सुख मिलना है, सिर्फ याद की यात्रा से और कोई तकलीफ नहीं।